13 सूरए अर रअद

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 1

आयत का अनुवाद:

"ख़ुदा के नाम से शुरु करता हूँ जो बड़ा मेहरबान रहम वाला है। अलिफ़ लाम मीम रा ये किताब (कुरान) की आयतें है और तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से जो कुछ तुम्हारे पास नाज़िल किया गया है बिल्कुल ठीक है मगर बहुतेरे लोग ईमान नहीं लाते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत में यह कहा गया है कि कुरान की आयतें अल्लाह की तरफ से सही हैं, लेकिन लोग इन पर विश्वास नहीं करते।
- **हेतु (Reasoning):** यह आयत केवल विश्वास का दावा करती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत या प्रमाणित आधार नहीं प्रस्तुत करती। सिर्फ "अल्लाह" के नाम का उल्लेख करने से कोई सत्यता स्थापित नहीं होती।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में सत्यता को अनुभव और तर्क से प्रमाणित किया जाता है, जैसे कि "प्रत्यक्षा" (Direct perception) और "अनुमान" (Inference) का उपयोग।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है। यह मानवता के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत नहीं हो सकती, क्योंकि यह व्यक्तिगत विश्वास पर निर्भर है।

आयत 2

आयत का अनुवाद:

"ख़ुदा वही तो है जिसने आसमानों को जिन्हें तुम देखते हो बग़ैर सुतून (खम्बों) के उठाकर खड़ा कर दिया फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ और सूरज और चाँद को (अपना) ताबेदार बनाया कि हर एक वक़्त मुक़र्ररा तक चला करते है वहीं (दुनिया के) हर एक काम का इन्तेज़ाम करता है और इसी ग़रज़ से कि तुम लोग अपने

परवरदिगार के सामने हाज़िर होने का यक़ीन करो।"
चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि आसमान, सूरज, चाँद, और अन्य प्राकृतिक घटनाओं का संचालन अल्लाह करता है।**
- **हेतु (Reasoning): इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है कि इन घटनाओं का संचालन केवल अल्लाह द्वारा ही किया जा सकता है। प्राकृतिक घटनाएँ, जैसे सूरज और चाँद का चक्कर लगाना, खगोलशास्त्र और प्राकृतिक विज्ञान द्वारा समझी जाती हैं।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक और विज्ञान दृष्टिकोण के अनुसार, सूर्य और चाँद की गति गुरुत्वाकर्षण और ग्रहों की गति द्वारा नियंत्रित होती है, न कि एक विशेष ईश्वर द्वारा।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वैज्ञानिक तर्क के विपरीत है और प्राकृतिक घटनाओं को एक अलौकिक हस्तक्षेप के रूप में प्रस्तुत करती है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत नहीं हो सकता।**

आयत 3
आयत का अनुवाद:
"(अपनी) आयतें तफसीलदार बयान करता है और वह वही है जिसने ज़मीन को बिछाया और उसमें (बड़े बड़े) अटल पहाड़ और दरिया बनाए और उसने हर तरह के मेवों की दो दो किस्में पैदा की (जैसे खट्टे मीठे) वही रात (के परदे) से दिन को ढाक देता है इसमें शक नहीं कि जो लोग और ग़ौर व फिक्र करते हैं उनके लिए इसमें (कुदरत खुदा की) बहुतेरी निशनियाँ हैं।"
चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में कहा गया है कि कुदरत की विभिन्न विशेषताएँ अल्लाह के द्वारा बनाई गई हैं, और इनका उद्देश्य लोग ग़ौर और फिक्र करें।**
- **हेतु (Reasoning): प्राकृतिक घटनाओं को समझने के लिए तर्क और वैज्ञानिक शोध की आवश्यकता होती है, न कि केवल धार्मिक दृष्टिकोण से।**
- **उदाहरण (Example): विज्ञान के दृष्टिकोण से, प्राकृतिक घटनाएँ जैविक और भौतिक प्रक्रियाओं का परिणाम हैं, जैसे पृथ्वी का निर्माण और मौसम की प्रक्रियाएँ।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नकारती है और धर्म के आधार पर प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करती है, जो सार्वभौमिक रूप से सभी के लिए स्वीकार्य नहीं है।**

आयत 4

आयत का अनुवादः

"और खुरमों (खजूर) के दरख़्त की एक जड़ और दो शाखें और बाज़ अकेला (एक ही शाख़ का) हालांकि सब एक ही पानी से सीचे जाते हैं और फलों में बाज़ को बाज़ पर हम तरजीह देते हैं बेशक जो लोग अक़्ल वाले हैं उनके लिए इसमें (कुदरत खुदा की) बहुतेरी निशनियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह कहा गया है कि खजूर के पेड़ों के विभिन्न रूपों में अल्लाह की निशानियाँ हैं।
- हेतु (Reasoning): यह तर्क नहीं करता कि कैसे प्रकृति में पाई जाने वाली विविधताएँ ईश्वर की ओर से हैं।
- उदाहरण (Example): वैदिक दृष्टिकोण में विविधता को जीवन के प्राकृतिक भाग के रूप में देखा जाता है, न कि केवल ईश्वर के संकेत के रूप में।
- निगमन (Conclusion): यह आयत प्राकृतिक विविधताओं को धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़ने का प्रयास करती है, जबकि विज्ञान इनकी व्याख्या जैविक और पर्यावरणीय कारकों से करता है।

आयत 5

आयत का अनुवादः

"और अगर तुम्हें (किसी बात पर) ताज्जुब होता है तो उन कुफ्फारों को ये क़ौल ताज्जुब की बात है कि जब हम (सड़गल कर) मिट्टी हो जायंगें तो क्या हम (फिर दोबारा) एक नई जहन्नुम में आयंगे ये वही लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार के साथ कुफ्र किया और यही वह लोग हैं जिनकी गर्दनों में (क़यामत के दिन) तौक़ पड़े होगें और यही लोग जहन्नुमी हैं कि ये इसमें हमेशा रहेगें।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि कुफ्फार (अविश्वासी) लोगों के लिए पुनः जन्म और शाश्वत नरक का वादा किया गया है।
- हेतु (Reasoning): इसका कोई तार्किक आधार नहीं है, क्योंकि यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जबकि जीवन और मृत्यु के प्रश्नों का समाधान विज्ञान और तर्क द्वारा किया जा सकता है।

- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में जीवन और मृत्यु का चक्र कर्मों पर निर्भर करता है, न कि केवल धार्मिक विश्वासों पर।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत पुनर्जन्म और शाश्वत दंड की अवधारणा पर आधारित है, जो सार्वभौमिक और तर्कसंगत रूप से स्वीकार्य नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण	विश्वास पर आधारित, वैज्ञानिक आधार नहीं
2	प्रमाण	प्राकृतिक घटनाओं का अंधविश्वासपूर्ण व्याख्या
3	प्रमाण	प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़ना
4	प्रमाण	प्राकृतिक विविधताओं का धार्मिक अर्थ देना
5	प्रमाण	पुनर्जन्म और शाश्वत दंड का दावा तर्कहीन

निष्कर्ष

इन आयतों में प्राकृतिक घटनाओं और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को अंधविश्वास और धार्मिक विश्वासों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। यह तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विपरीत है, और इसलिए ये आयतें सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत नहीं हो सकतीं। न्याय दर्शन और वैदिक दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, सभी घटनाओं और विचारों को तर्क, प्रमाण और व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझना आवश्यक है, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 6

आयत का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल) ये लोग तुम से भलाई के क़ब्ल ही बुराई (अज़ाब) की जल्दी मचा रहे हैं हालांकि उनके पहले (बहुत से लोगों की) सज़ाएँ हो चुकी हैं और इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बावजूद उनकी शरारत के लोगों पर बड़ा बख़्शिश (करम) वाला है और इसमें भी शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनन सख़्त अज़ाब वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत बताती है कि ईश्वर भलाई के मुकाबले बुराई का उत्तर जल्द नहीं देता और बुराई करने वालों को सजा देता है, हालांकि उनके पूर्वजों ने भी अपराध किए थे।
- **हेतु (Reasoning):**
 यह आयत प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती। अगर कोई व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार सजा पाने का हकदार है, तो उसका त्वरित परिणाम नहीं आना अवैध प्रतीत हो सकता है। यह स्पष्ट नहीं किया गया कि ईश्वर किस प्रकार से बुराई का सामना करता है और यह कैसे तर्कसंगत है।
- **उदाहरण (Example):**
 वेदांत और सांख्य योग में कर्मों के परिणाम के समय को कर्मों की गुणवत्ता और उनके प्रभावों के अनुसार निर्धारित किया जाता है, न कि किसी त्वरित शाही निर्णय के आधार पर।
- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के खिलाफ जाती है और परमेश्वर के कर्मों को बिना उचित कारण के या तर्कसंगत प्रक्रिया के बाहर प्रस्तुत करती है।

आयत 7

आयत का अनुवाद:

"और वो लोग काफिर हैं कहते हैं कि इस शख़्स (मोहम्मद) पर उसके परवरदिगार की तरफ से कोई निशानी (हमारी मर्ज़ी के मुताबिक़) क्यों नहीं नाज़िल की जाती ऐ रसूल तुम तो सिर्फ (ख़ौफे ख़ुदा से) डराने वाले हो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत दावा करती है कि मोहम्मद पर अल्लाह की ओर से कोई निशानी न भेजे जाने पर काफिरों ने शक किया।
- **हेतु (Reasoning):**
  निशानियाँ (चमत्कारी संकेत) ईश्वर द्वारा भेजी जाती हैं, लेकिन इस आयत में यह पूछा गया है कि वह ईश्वर की इच्छाओं के अनुसार क्यों नहीं आते, जो इस बात का संकेत है कि निशानियाँ केवल विश्वास के लिए हैं और न कि तर्क या ज्ञान के स्रोत।
- **उदाहरण (Example):**
  सांख्य दर्शन में सत्य और ज्ञान को प्रकट करने के लिए तर्क और निष्कलंक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, न कि सिर्फ चमत्कारी संकेतों के द्वारा।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत ज्ञान और तर्क के स्थान पर चमत्कारी संकेतों को प्राथमिकता देती है, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण के विपरीत है।

आयत 8
आयत का अनुवाद:
"और हर क़ौम के लिए एक हिदायत करने वाला है हर मादा जो कि पेट में लिए हुए है और उसको ख़ुदा ही जानता है व बच्चा दानियों का घटना बढ़ना (भी वही जानता है) और हर चीज़ उसके नज़दीक़ एक अन्दाज़े से है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत दावा करती है कि प्रत्येक क़ौम के लिए हिदायत देने वाला होता है और सभी घटनाएँ ईश्वर के हाथों में हैं।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत बिना प्रमाण के किसी भी घटना को ईश्वर के साथ जोड़ती है। ज्ञान और घटनाओं को सिद्ध करने के लिए प्रमाण या युक्तिसंगत आधार की आवश्यकता होती है, जबकि यह आयत बिना किसी प्रमाण के ईश्वर को हर घटना का कर्ता मानती है।

- **उदाहरण (Example):**
  वेदांत में भी प्रत्येक क्रिया का उद्देश्य ज्ञान और तर्क द्वारा स्पष्ट किया जाता है, जबकि यहाँ बिना तर्क के ईश्वर की भूमिका स्थापित की जा रही है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न केवल तर्कहीन है बल्कि यह किसी घटना की स्वतंत्रता या स्वतंत्र कार्य को नकारती है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 9
आयत का अनुवाद:
"(वही) बातिन (छुपे हुवे) व ज़ाहिर का जानने वाला (सब से) बड़ा और आलीशान है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि ईश्वर न केवल प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) बल्कि गुप्त (बातिन) को भी जानने वाला है।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत वस्तुस्थिति और सत्य को केवल ईश्वर के हाथों में मानती है। ज्ञान और सत्य का वास्तविक आधार विश्वसनीय प्रमाणों पर होना चाहिए, न कि केवल दिव्य ज्ञान पर निर्भर होना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में सत्य का निर्धारण प्रमाण और प्रमाणिकता द्वारा होता है, न कि किसी एकल स्रोत से जो केवल ईश्वर की शक्ति का प्रतीक हो।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत विश्वसनीय प्रमाणों की आवश्यकता को नकारती है और केवल ईश्वर के ज्ञान पर निर्भर करती है, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण के विपरीत है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
6	प्रमेय	बिना उचित कारण के बुराई की सजा देना अवैध प्रतीत होता है।
7	प्रमेय	चमत्कारी संकेतों को तर्क के बजाय प्राथमिकता देना तर्कहीन है।
8	प्रमाण	घटनाओं को बिना प्रमाण के ईश्वर के हाथों में जोड़ना तर्कहीन है।
9	प्रमाण	प्रमाण के बिना दिव्य ज्ञान पर निर्भर होना तर्कहीन है।

निष्कर्ष

इन आयतों में मुख्य रूप से तर्क और प्रमाण की कमी है। घटनाओं और कर्मों को तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत करने की बजाय अंधविश्वास और केवल विश्वास के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। यह मानवता के न्याय और तर्कसंगत दृष्टिकोण के खिलाफ है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 11

आयत का अनुवाद:

"(उसके नज़दीक) सब बराबर हैं (आदमी किसी हालत में हो मगर) उस अकेले के लिए उसके आगे उसके पीछे उसके निगेहबान (फरिश्ते) मुक़र्रर हैं कि उसको हुक्म ख़ुदा से हिफाज़त करते हैं। जो (नेअमत) किसी क़ौम को हासिल हो बेशक वह लोग खुद अपनी नफ्सानी हालत में तग्य्युर न डालें ख़ुदा हरगिज़ तग़य्युर नहीं डाला करता और जब ख़ुदा किसी क़ौम पर बुराई का इरादा करता है तो फिर उसका कोई टालने वाला नहीं और न उसका उसके सिवा कोई वाली और (सरपरस्त) है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत बताती है कि अगर अल्लाह किसी क़ौम पर बुराई का इरादा करता है, तो उसे कोई बदल नहीं सकता, और अल्लाह के अलावा कोई भी उसे बचाने वाला नहीं है।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत एक कठोर और अपरिवर्तनीय सिद्धांत प्रस्तुत करती है कि ईश्वर की इच्छा के सामने सभी प्रयास विफल रहते हैं, जो यह संकेत देती है कि हर स्थिति पूरी तरह से ईश्वर के नियंत्रण में है। हालांकि, यह विचार सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन यह स्वतंत्र इच्छा और निर्णय लेने की क्षमता का उल्लंघन करता है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, किसी व्यक्ति या समुदाय को अपनी स्थिति बदलने का अधिकार होना चाहिए, जो स्वतंत्र इच्छा और निर्णय के सिद्धांत के अनुसार होता है। एक उदाहरण के रूप में, संस्कृतियों में स्वतंत्रता और चेतना का सम्मान किया जाता है, और यह स्वीकार किया जाता है कि बदलाव और सुधार स्वेच्छा से आ सकते हैं।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत इस बात का संकेत देती है कि सभी चीज़ों को केवल ईश्वर के हाथों में मानना न्याय और स्वतंत्रता के सिद्धांत के खिलाफ हो सकता है। इसके अनुसार, कोई भी स्वतंत्रता नहीं होती और सब कुछ पूर्वनिर्धारित होता है।

आयत 12
आयत का अनुवाद:
"वह वही तो है जो तुम्हें डराने और लालच देने के वास्ते बिजली की चमक दिखाता है और पानी से भरे बोझल बादलों को पैदा करता है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत दावा करती है कि अल्लाह बिजली की चमक और बादलों को पैदा करता है ताकि वह इंसानों को डराए और लालच दे।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत प्रकृति के तत्वों को केवल एक डराने या लालच देने के लिए इस्तेमाल करने की बात

करती है, जो कि एक वैज्ञानिक या तर्कसंगत दृष्टिकोण से अप्रत्याशित है। प्रकृति के घटनाओं का वास्तविक उद्देश्य और कारण समझना चाहिए, न कि उन्हें एक मात्र डराने और लालच के लिए प्रस्तुत किया जाए।

- **उदाहरण (Example):**
  विज्ञान और तात्त्विक दृष्टिकोण में बिजली और बादलों की उत्पत्ति को भौतिकी और पर्यावरणीय प्रक्रियाओं द्वारा समझा जाता है, न कि इसे ईश्वर के डराने के हथियार के रूप में।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को केवल एक धार्मिक उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत करती है, जो तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के ख़िलाफ है। यह दृष्टिकोण गलत है क्योंकि वह घटनाओं के कारणों को अन्यथा सिद्ध करता है।

आयत 13

आयत का अनुवाद:

"और ग़र्ज और फरिश्ते उसके ख़ौफ से उसकी हम्दो सना की तस्बीह किया करते हैं वही (आसमान से) बिजलियों को भेजता है फिर उसे जिस पर चाहता है गिरा भी देता है और ये लोग ख़ुदा के बारे में (ख़्वामाख़्वाह) झगड़े करते हैं हालांकि वह बड़ा सख़्त क़ूवत वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत दावा करती है कि फरिश्ते और ग़र्ज़ (आकाशीय घटनाएँ) ईश्वर की महिमा का उच्चारण करते हैं और बिजली को भेजने और उसे गिराने का कार्य करते हैं।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत दिव्य शक्तियों को केवल प्राकृतिक घटनाओं के कारणों के रूप में प्रस्तुत करती है, जो कि वस्तुतः उनके वास्तविक कारणों को नकारती है। प्राकृतिक घटनाएँ जैसे बिजली, भूकंप आदि वैज्ञानिक और भौतिक कारणों पर निर्भर होती हैं, न कि केवल ईश्वर की इच्छा पर।
- **उदाहरण (Example):**
  विज्ञान में, बिजली का उत्पत्ति और गिरे जाने के कारणों को वायुमंडलीय और विद्युत गुणों के आधार पर समझा जाता है। यह दृष्टिकोण ईश्वर की इच्छा के बजाय प्राकृतिक प्रक्रियाओं के कारण है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को केवल दिव्य इच्छा का परिणाम मानती है, जबकि तर्कसंगत दृष्टिकोण और वैज्ञानिक व्याख्याएँ इनके वास्तविक कारणों को सामने लाती हैं।

आयत 14

आयत का अनुवाद:

"(मुसीबत के वक़्त) उसी का (पुकारना) ठीक पुकारना है और जो लोग उसे छोड़कर (दूसरों को) पुकारते हैं वह तो उनकी कुछ सुनते तक नहीं मगर जिस तरह कोई शख़्स (बग़ैर उँगलियाँ मिलाए) अपनी दोनों हथेलियाँ पानी की तरफ फैलाए ताकि पानी उसके मुँह में पहुँच जाए हालांकि वह किसी तरह पहुँचने वाला नहीं और (इसी तरह) काफिरों की दुआ गुमराही में (पड़ी बहकी फिरा करती है)।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि केवल अल्लाह ही सही पुकार को सुनता है और जो दूसरे देवताओं या शक्तियों को पुकारते हैं, उनकी पुकार निरर्थक होती है।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकती है, लेकिन यह तथ्यात्मक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से असंगत है। अन्य धार्मिक या आध्यात्मिक व्यवस्थाओं में भी अपने-अपने देवताओं या शक्तियों की पुकार का महत्व होता है।
- **उदाहरण (Example):**
  विविध धर्मों में भगवान या देवताओं को पुकारने की प्रक्रिया धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों पर आधारित होती है, और यह किसी भी सिद्धांत या तर्क के बिना उन विश्वासों की शक्ति को नकारने वाली हो सकती है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत अन्य धार्मिक विश्वासों और उनके देवताओं को नकारती है, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है।

आयत 15

आयत का अनुवाद:

"और आसमानों और ज़मीन में (मख़लूक़ात से) जो कोई भी है खुषी से या ज़बरदस्ती सब (अल्लाह के आगे सर बसजूद हैं और (इसी तरह) उनके साए भी सुबह व शाम (सजदा करते हैं)।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत दावा करती है कि सभी प्राणी (चाहे वे स्वेच्छा से हो या मजबूरी में) अल्लाह के आगे सजदा करते हैं।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता की अवधारणा को नकारती है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता के दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है। हर व्यक्ति का अपनी आस्था और आचरण के संबंध में स्वतंत्र विचार होना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):**
  धार्मिक स्वतंत्रता और तात्त्विक दृष्टिकोण में, हर प्राणी को अपनी आस्था के अनुसार किसी भी कार्य को करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत स्वतंत्रता के सिद्धांत के खिलाफ जाती है, और यह मानवता के तात्त्विक और नैतिक दृष्टिकोण से असंगत है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	**तत्व (Nyaya Element)**	**मुख्य आलोचना**
11	**व्याप्ति**	**तर्कसंगत स्वतंत्रता और परिवर्तन के सिद्धांत के खिलाफ है।**
12	**प्रमाण**	**प्राकृतिक घटनाओं को केवल ईश्वर के कार्य के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।**

13	प्रमेय	प्राकृतिक घटनाओं को दिव्य कार्य मानना तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के खिलाफ है।
14	प्रमाण	अन्य धार्मिक विश्वासों को नकारना तर्कसंगत दृष्टिकोण के खिलाफ है।
15	प्रमाण	स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय के सिद्धांत के खिलाफ है।

निष्कर्ष
ये आयतें तर्कसंगत दृष्टिकोण और वैज्ञानिक तथ्यों को नकारती हैं, और प्राकृतिक घटनाओं और मानव स्वतंत्रता को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही देखती हैं। इससे मानवता और न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन होता है, क्योंकि यह दृष्टिकोण एकतरफा और अनिवार्य रूप से नियंत्रित है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 16: आयत का अनुवाद:
"ऐ रसूल) तुम पूछो कि (आख़िर) आसमान और ज़मीन का परवरदिगार कौन है (ये क्या जवाब देगें) तुम कह दो कि अल्लाह है (ये भी कह दो कि क्या तुमने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं जो अपने लिए आप न तो नफ़े पर क़ाबू रखते हैं न ज़रर (नुकसान) पर (ये भी तो) पूछो कि भला (कहीं) अन्धा और आँखों वाला बराबर हो सकता है (हरगिज़ नहीं) (या कहीं) अंधेरा और उजाला बराबर हो सकता है (हरगिज़ नहीं) इन लोगों ने ख़ुदा के कुछ शरीक़ ठहरा रखे हैं क्या उन्हें ख़ुदा ही की सी मख़लूक़ पैदा कर रखी है जिनके सबब मख़लूकात उन पर मुशतबा हो गई है (और उनकी खुदाई के क़ायल हो गए) तुम कह दो कि ख़ुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला और वही यकता और सिपर (सब पर) ग़ालिब है"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमा (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में यह दावा किया गया है कि अल्लाह का कोई साथी नहीं हो सकता और वह सभी चीज़ों का उत्पत्ति करने वाला है, जैसे अंधा और आँखों वाला समान नहीं हो सकते।

- **हेतु (Reasoning):**
  यहाँ अल्लाह के साथी न होने की तुलना अंधे और आँखों वाले के बीच अंतर से की जा रही है। यह एक तुलना है, लेकिन यह एक अपूर्ण और भ्रामक तुलना है। दृश्य और अदृश्य की तुलना करना तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि अंधा और आँखों वाला जीवित व्यक्ति हैं, जबकि अल्लाह एक अदृश्य और अलौकिक सत्ता मानी जाती है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में ब्रह्मा, विष्णु और शिव को भी सृष्टि के रचनाकार और पालनहार के रूप में माना गया है, और यह तर्क नहीं किया गया कि उनके बीच कोई असमानता हो सकती है, जो इस तुलना को चुनौती देता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में की गई तुलना अंधा और आँखों वाला की तुलना में दोषपूर्ण है, क्योंकि यह अदृश्य और अलौकिक के बीच असंवेदनशील तुलना को प्रस्तुत करती है।

आयत 17: आयत का अनुवाद:
"उसी ने आसमान से पानी बरसाया फिर अपने अपने अन्दाज़े से नाले बह निकले फिर पानी के रेले पर (जोश खाकर) फूला हुआ झाग (फेन) आ गया और उस चीज़ (धातु) से भी जिसे ये लोग ज़ेवर या कोई असबाब बनाने की ग़रज़ से आग में तपाते हैं इसी तरह फेन आ जाता है (फिर अलग हो जाता है) यूं ख़ुदा हक़ व बातिल की मसले बयान फरमाता है (कि पानी हक़ की मिसाल और फेन बातिल की) ग़रज़ फेन तो खुश्क होकर ग़ायब हो जाता है जिससे लोगों को नफा पहुँचता है (पानी) वह ज़मीन में ठहरा रहता है यूं ख़ुदा (लोगों के समझाने के वास्ते) मसले बयान फरमाता है"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में यह बताया गया है कि पानी हक़ की मिसाल और फेन बातिल की मिसाल है, और यह दोनों एक दूसरे से अलग हो जाते हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  पानी और फेन के बीच तुलना करना व्यावहारिक और तार्किक नहीं है। पानी एक स्थिर तत्व है जो जीवन और नफे के लिए उपयोगी है, जबकि फेन क्षणिक और नाशवान है। यह एक अप्राकृतिक तुलना है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में, सत् और असत् की परिभाषा स्पष्ट रूप से की जाती है, जिसमें असत् का निराकरण किया जाता है, लेकिन इसे पानी और फेन के संदर्भ में प्रस्तुत करना उलझन पैदा करता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्राकृतिक घटनाओं और तत्वों को अलौकिक संदर्भ में प्रस्तुत करने के बजाय, व्यावहारिक और तार्किक दृष्टिकोण से विचार की आवश्यकता को नकारती है।

आयत 18: आयत का अनुवाद:
"जिन लोगों ने अपने परवरदिगार का कहना माना उनके लिए बहुत बेहतरी है और जिन लोगों ने उसका कहा न माना (क़यामत में उनकी ये हालत होगी) कि अगर उन्हें रुए ज़मीन के सब ख़ज़ाने बल्कि उसके साथ इतना और मिल जाए तो ये लोग अपनी नजात के बदले उसको (ये खुशी) दे डालें (मगर फिर भी कोई फायदा नहीं) यही लोग हैं जिनसे बुरी तरह हिसाब लिया जाएगा और आख़िर उन का ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरी जगह है"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत बताती है कि जो लोग अल्लाह के आदेशों का पालन नहीं करेंगे, उन्हें क़यामत में शुद्ध अपराध के लिए सज़ा मिलेगी, चाहे उनके पास सभी खज़ाने क्यों न हों।

- **हेतु (Reasoning):**
  इस कथन में यह दावे किए गए हैं कि क़यामत के दिन कोई तर्क नहीं होगा और लोग अपनी गलतियों को सुधारने के लिए कोई प्रयास नहीं कर सकते। यह वास्तविकता और न्याय के खिलाफ

है।

- **उदाहरण (Example):**
 भगवद गीता में कर्म और फल के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए, व्यक्ति को अपने कार्यों के परिणामों को स्वीकारने का अवसर मिलता है, जबकि इस आयत में इसे पूरी तरह से नकारा गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय और सुधार के सिद्धांत को नकारते हुए, एक निराशाजनक और कठोर दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
16	उपमा (Comparison)	**अंधा और आँखों वाला की तुलना अलौकिक के संदर्भ में असंगत है।**
17	व्याप्ति (Invariable Concomitance)	**पानी और फेन की तुलना अप्राकृतिक और भ्रामक है।**
18	प्रमेय (Object of Knowledge)	**क़यामत में सुधार की संभावना को नकारना, न्याय और सुधार के सिद्धांत के खिलाफ है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में न्याय दर्शन के सिद्धांतों का पालन नहीं किया गया है। तर्कसंगतता, विज्ञान, और सुधार की संभावना को नकारा गया है, जो मानवता के लिए गलत संदेश है।

आयत 19 और 20 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण:

आयत 19 का अनुवाद: "भला वह शख़्स जो ये जानता है कि जो कुछ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है बिल्कुल ठीक है कभी उस शख़्स के बराबर हो सकता है जो मुत्तलिक़ (पूरा) अंधा है (हरगिज़ नहीं)।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
आयत का दावा है कि वह व्यक्ति जो यह जानता है कि ईश्वर की तरफ से जो ज्ञान आया है, वह बिल्कुल सही है, वह अंधे व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता।

हेतु (Reasoning):
यह आयत यह मानती है कि ज्ञान और अंधेपन का अंतर केवल ज्ञान प्राप्ति पर आधारित है। इसे तर्कसंगत तरीके से समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इस बात को जानें कि ज्ञान का मूल्य तभी होता है जब वह सार्वभौमिक रूप से सत्य हो। सिर्फ किसी के व्यक्तिगत विश्वास से किसी विचार को सच मानना तर्कसंगत नहीं है।

उदाहरण (Example):
जब हम वैदिक दर्शन और उन्नत विज्ञान से ज्ञान प्राप्त करते हैं, तो यह जरूरी नहीं कि केवल एक स्रोत या विश्वास से सच्चाई साबित हो। मानवता के लिए सार्वभौमिक तर्क, प्रमाण और वैध ज्ञान आवश्यक होते हैं, जो कि केवल विश्वास पर आधारित नहीं होते। अंधा और जागृत व्यक्ति का अंतर ज्ञान के प्रकार और उसकी सत्यता पर आधारित है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल विश्वास पर आधारित ज्ञान को महत्वपूर्ण मानती है, जबकि तर्कसंगत, वैज्ञानिक और प्रमाणित ज्ञान को नजरअंदाज करती है। यह दृष्टिकोण मानवता के लिए अपूर्ण है क्योंकि यह केवल विश्वासों पर निर्भर करता है, न कि साक्ष्य और प्रमाण पर।

आयत 20 का अनुवाद: "इससे तो बस कुछ समझदार लोग ही नसीहत हासिल करते हैं वह लोग है कि ख़ुदा से जो एहद किया उसे पूरा करते हैं और अपने पैमान को नहीं तोड़ते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि जो लोग ईश्वर से किए गए वादे को पूरा करते हैं और अपने पैमानों को नहीं तोड़ते, वही समझदार लोग होते हैं और उन्हें नसीहत मिलती है।

हेतु (Reasoning):
यह कथन सही और गलत के बीच अंतर को स्पष्ट करता है, लेकिन केवल ईश्वर से किए गए वादों को पूरा करने को ही "समझदारी" मानना सीमित दृष्टिकोण है। यहाँ, किसी वादे के पालन को केवल विश्वास और अनुशासन से जोड़ा गया है, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि केवल विश्वास से सभी नैतिक और तार्किक तर्कों को सही ठहराया जा सकता है।

उदाहरण (Example):
मनुस्मृति में भी यह कहा गया है कि सत्य बोलना और धर्म का पालन करना ही समझदारी है, लेकिन इसमें इस बात को भी शामिल किया गया है कि यह धर्म और सत्य सार्वभौमिक तर्क और समाज के लिए उपयुक्त होना चाहिए, न कि केवल व्यक्तिगत विश्वास पर निर्भर होना चाहिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत मानवता के लिए नैतिक और तर्कसंगत निर्णयों के बजाय केवल विश्वास और व्यक्तिगत वादों को महत्व देती है, जो सार्वभौमिक सत्य और ज्ञान के सिद्धांतों के खिलाफ है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
19	प्रमेय	केवल विश्वास पर आधारित ज्ञान से अंधापन और जागरूकता का अंतर मानना तर्कहीन है।
20	प्रमाण	केवल व्यक्तिगत वादों को समझदारी मानना वैश्विक सत्य और तर्क से संबंधित नहीं है।

निष्कर्ष: आयत 19 और 20 में ज्ञान और समझदारी के मामलों में विश्वास को अधिक महत्व दिया गया है, लेकिन यह वैश्विक तर्क और प्रमाणित ज्ञान की आवश्यकता को नकारते हैं। इन आयतों में तर्कसंगत और विज्ञान आधारित दृष्टिकोण का अभाव है, जो मानवता के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

आयत 21 से 25 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण:

आयत 21 का अनुवाद:

"ये वह लोग हैं कि जिन (ताल्लुक़ात) के क़ायम रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया उन्हें क़ायम रखते हैं और अपने परवरदिगार से डरते हैं और (क़यामत के दिन) बुरी तरह हिसाब लिए जाने से ख़ौफ खाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के बारे में बात करती है जो खुदा के आदेशों का पालन करते हैं और बुरे हिसाब के डर से खुदा से डरते हैं।

हेतु (Reasoning):
यह आयत भय और श्रद्धा को आधार मानते हुए एक व्यक्ति की अच्छाई का मूल्यांकन करती है, जो एक सीमित दृष्टिकोण है। किसी के कार्यों की गुणवत्ता केवल भय और डर पर आधारित नहीं हो सकती, बल्कि उसकी नैतिकता और तर्कसंगतता पर भी आधारित होनी चाहिए।

उदाहरण (Example):
वेदांत दर्शन में, कार्यों का मूल्यांकन धर्म और सत्य के आधार पर किया जाता है, न कि केवल किसी प्रकार के भय या श्रद्धा पर। यहाँ तक कि भगवद गीता में भी कर्मों के सही उद्देश्य और तात्त्विक ज्ञान की बात की गई है, न कि केवल डर पर आधारित कार्यों की।

निगमन (Conclusion):
यह आयत उन लोगों की महत्ता पर जोर देती है जो भय और डर से काम करते हैं, लेकिन यह मानवता के लिए उचित नहीं है क्योंकि यह कर्मों की सत्यता और तर्कसंगतता की बजाय भय पर आधारित है।

आयत 22 का अनुवाद:

"और ये वह लोग हैं जो अपने परवरदिगार की खुशनूदी हासिल करने की ग़रज़ से (जो मुसीबत उन पर पड़ी है) झेल गए और पाबन्दी से नमाज़ अदा की और जो कुछ हमने उन्हें रोज़ी दी थी उसमें से छिपाकर और खुल कर ख़ुदा की राह में खर्च किया और ये लोग बुराई को भी भलाई स दफा करते हैं -यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत की खूबी मख़सूस है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के बारे में है जो अपने परवरदिगार की खुशी के लिए मुसीबतों को सहते हैं, नमाज़ अदा करते हैं, और ख़ुदा के मार्ग में खर्च करते हैं।

हेतु (Reasoning):
यह आयत एक आदर्श जीवन जीने की बात करती है, लेकिन इसका आधार केवल एक व्यक्ति के विश्वास और श्रद्धा पर है। यह किसी तर्कसंगत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित नहीं है, जो सत्य और वास्तविकता के आधार पर हो।

उदाहरण (Example):
वैदिक दर्शन में कर्म का महत्व है, लेकिन कर्म का परिणाम और उद्देश्य हमेशा सत्य और तर्क पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल व्यक्तिगत विश्वास पर।

निगमन (Conclusion):
यह आयत उन लोगों के कार्यों को प्रोत्साहित करती है जो केवल श्रद्धा और विश्वास के आधार पर कार्य करते हैं, लेकिन यह सार्वभौमिक तर्क और सत्य की आवश्यकता को नकारती है।

आयत 23 का अनुवाद:

"हमेश रहने के बाग़ जिनमें वह आप जाएंगे और उनके बाप, दादाओं, बीवियों और उनकी औलाद में से जो लोग नेको कार है (वह सब भी) और फरिश्ते बेहशत के हर दरवाज़े से उनके पास आएगें।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के बारे में बात करती है जो अच्छे कर्म करते हैं और उनके परिवार के लोग भी उनके साथ स्वर्ग में जाएंगे।

हेतु (Reasoning):
यह आयत केवल अच्छे कर्मों पर ध्यान केंद्रित करती है, लेकिन यह व्यक्तित्व, तर्क और नैतिकता को ध्यान में नहीं रखती। स्वर्ग में जाने की अवधारणा एक व्यक्ति के कर्मों से जुड़ी हुई होती है, न कि केवल परिवार के संबंधों से। इस प्रकार, यह तर्कसंगत नहीं है कि परिवार के अन्य सदस्य केवल किसी के अच्छे कर्मों के कारण स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं।

उदाहरण (Example):
स्मृतियों में यह कहा गया है कि अच्छे कर्मों के आधार पर ही किसी को स्वर्ग या नर्क मिलेगा, न कि परिवार के रिश्तों पर निर्भर रहेगा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत परिवार के रिश्तों को आधार बनाती है, जो न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ है। स्वर्ग या नर्क में जाने का निर्णय केवल व्यक्तिगत कर्मों और तर्कों पर आधारित होना चाहिए।

आयत 24 का अनुवाद:

"और सलाम अलैकुम (के बाद कहेगें) कि (दुनिया में) तुमने सब्र किया (ये उसी का सिला है देखो) तो आख़िरत का घर कैसा अच्छा है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के बारे में बात करती है जिन्होंने इस दुनिया में सब्र किया और उन्हें आख़िरत में पुरस्कार दिया जाएगा।

हेतु (Reasoning):
यह आयत यह मानती है कि केवल सब्र करने से किसी को पुरस्कार मिलेगा, लेकिन यह स्पष्ट नहीं करती कि इस पुरस्कार के पीछे क्या तर्क है। इस दृष्टिकोण में किसी घटना या क्रिया के कारण का स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया है, जो न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में हर क्रिया का एक कारण (Hetu) **और परिणाम होना चाहिए। यह आयत बिना कारण के केवल परिणाम को दिखाती है, जो तर्कसंगत नहीं है।**

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना उचित कारण (Hetu) **के पुरस्कार की अवधारणा पेश करती है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 25 का अनुवाद:

"और जो लोग ख़ुदा से एहद व पैमान को पक्का करने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन (तालुकात बाहमी) के क़ायम रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है उन्हें क़तआ (तोड़ते) करते हैं और रुए ज़मीन पर फ़साद फैलाते फिरते हैं ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए लानत है और ऐसे ही लोगों के वास्ते बड़ा घर (जहन्नुम) है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के बारे में है जो अपने वादों को तोड़ते हैं और समाज में فساد **फैलाते हैं, जिन्हें बड़ी सजा मिलेगी।**

हेतु (Reasoning):
यह आयत दिखाती है कि वादे तोड़ने और समाज में भ्रष्टाचार फैलाने के कारण सजा मिलती है, जो न्याय के

सिद्धांतों के अनुरूप है। लेकिन यह सजा केवल व्यक्तिगत कर्मों पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि समाज की संरचना और न्यायपूर्ण तर्क पर आधारित होनी चाहिए।

उदाहरण (Example):
स्मृतियों में यह कहा गया है कि समाज में भ्रष्टाचार और दुराचार का समर्थन नहीं किया जाता, लेकिन यह भी तर्कसंगत तरीके से दिखाया गया है कि हर व्यक्ति की सजा तर्क, समाज के कानून और उसके कार्यों के कारण होनी चाहिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत सही कर्मों और समाज में अपराध करने के बीच संबंध दिखाती है, लेकिन इसे केवल व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित दिखाया गया है, जबकि तर्क और समाज के नियमन के सिद्धांतों के बिना यह अपूर्ण है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
21	प्रमेय	भय और श्रद्धा पर आधारित कर्मों को सही मानना तर्कहीन है।
22	प्रमाण	केवल विश्वास पर आधारित कर्मों को श्रेष्ठ मानना तर्कसंगत नहीं है।
23	व्याप्ति	स्वर्ग में जाने के लिए व्यक्तिगत कर्मों के अलावा परिवार के रिश्तों का आधार बनाना गलत है।
24	हेतु	पुरस्कार के पीछे कारण का अभाव तर्कसंगत नहीं है।
25	व्याप्ति	वादे तोड़ने और भ्रष्टाचार फैलाने के बीच का संबंध केवल विश्वास पर आधारित है, तर्क के अभाव में।

निष्कर्ष:

इन आयतों में कर्मों के मूल्यांकन में तर्क और न्याय की अनुपस्थिति है। अधिकांश आयतें विश्वास और भय पर आधारित हैं, न कि सत्य, प्रमाण और वैज्ञानिक तर्क पर। मानवता के लिए उचित और तर्कसंगत दृष्टिकोण के बिना यह आयतें अंधविश्वास और व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित हैं, जो सार्वभौमिक सत्य और न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ हैं।

आयत 26 से 30 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण:

आयत 26 का अनुवाद:

"और ख़ुदा ही जिसके लिए चाहता है रोज़ी को बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग करता है और ये लोग दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी पर बहुत निहाल हैं हालांकि दुनियावी ज़िन्दगी (नईम) आख़िरत के मुक़ाबिल में बिल्कुल बेहकीक़त चीज़ है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि भगवान अपनी इच्छा से किसी के लिए रोज़ी बढ़ाता या घटाता है, और लोग दुनिया की तात्कालिक सुख-सुविधाओं पर अत्यधिक ध्यान देते हैं, जबकि यह जीवन वास्तविक नहीं है जब इसकी तुलना आख़िरत से की जाती है।

हेतु (Reasoning):
यह आयत इस तर्क को बढ़ावा देती है कि संसारिक खुशियाँ और दुख एक प्रकार की झूठी या तात्कालिक स्थिति हैं, जबकि आख़िरत को प्राथमिकता दी जाती है। इस दृष्टिकोण में जीवन के वास्तविकता और तात्त्विकता की जांच नहीं की जाती, और यह एक निराकार विश्वास पर आधारित है जो तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कमज़ोर है।

उदाहरण (Example):
वेदांत के अनुसार, जीवन का उद्देश्य आत्मा का उन्नति और परमात्मा से मिलन है, न कि केवल भौतिक सुखों का संग्रहण। इसलिए, दुनियावी सुखों को अंतिम उद्देश्य मानना तात्त्विक दृष्टिकोण से सही नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और यह वास्तविकता, तर्क और प्रमाण के बिना दुनियावी जीवन की निंदा करती है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 27 का अनुवाद:

"और जिन लोगों ने कुफ्र अख़्तियार किया वह कहते हैं कि उस (शख़्स यानि तुम) पर हमारी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ कोई मौजिज़ा उसके परवरदिगार की तरफ से क्यों नहीं नाज़िल होता तुम उनसे कह दो कि इसमें शक नहीं कि ख़ुदा जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि जिन लोगों ने विश्वास को नकारा है, वे संकेत मांगते हैं, जबकि जो लोग सही रास्ते पर हैं, वे अपने विश्वास को अपने दिलों में महसूस करते हैं।

हेतु (Reasoning):
यह आयत एक वैचारिक पद्धति पर आधारित है, जिसमें विश्वास और अविश्वास के बीच का अंतर केवल ख़ुदा की इच्छा पर निर्भर करता है। यह दृष्टिकोण पूरी तरह से एक आस्था-आधारित विचार है, लेकिन इसमें प्रमाण या कारण की कोई स्पष्टता नहीं है।

उदाहरण (Example):
वेदांत दर्शन में, एक व्यक्ति को ज्ञान प्राप्ति के लिए अपना मन और बुद्धि शुद्ध करनी होती है। केवल दिव्य इच्छा से कुछ होना तात्त्विक रूप से उचित नहीं है, क्योंकि हर चीज़ के पीछे कारण और कारण की स्पष्टता होनी चाहिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना किसी तर्क या स्पष्ट कारण के विश्वास और अविश्वास के बीच का अंतर बताती है, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं है।

आयत 28 का अनुवाद:

"और जिसने उसकी तरफ रुज़ू की उसे अपनी तरफ पहुँचने की राह दिखाता है (ये) वह लोग हैं जिन्होंने इमान कुबूल किया और उनके दिलों को ख़ुदा की चाह से तसल्ली हुआ करती है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि जो लोग विश्वास करते हैं, उनके दिलों में ख़ुदा का ध्यान और तसल्ली होती है।

हेतु (Reasoning):
यह आयत उन लोगों की स्थिति को दर्शाती है जो इश्वर की ओर मुड़ते हैं और उनका विश्वास उनके मानसिक शांति और संतोष का कारण बनता है। जबकि यह भावनात्मक शांति की बात करती है, लेकिन इसके वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार का कोई उल्लेख नहीं है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में, कार्यों के परिणाम को तर्कसंगत रूप से दिखाया जाता है, जबकि केवल विश्वास या भावनात्मक शांति पर आधारित स्थितियों को तर्कसंगत रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल विश्वास और भावनात्मक संतोष पर आधारित है, और इस तरह के दृष्टिकोण का तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार कमजोर है।

आयत 29 का अनुवाद:

"जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनके वास्ते (बेहिश्त में) तूबा (दरख़्त) और ख़ुशहाली और अच्छा अन्जाम है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत उन लोगों के बारे में है जो विश्वास करते हैं और अच्छे काम करते हैं, उन्हें स्वर्ग में शांति और सुख मिलेगा।

हेतु (Reasoning):
 यह आयत कर्मों के अच्छे परिणाम की बात करती है, लेकिन इसका आधार केवल विश्वास पर है। धर्म के कार्यों का मूल्यांकन करते समय तर्क और न्याय के सिद्धांतों के आधार पर उन्हें न्यायसंगत परिणाम देना चाहिए, न कि केवल विश्वास के आधार पर।

उदाहरण (Example):
 न्याय दर्शन में, कर्मों का मूल्यांकन हमेशा तर्क और कारण के आधार पर किया जाता है, न कि केवल आस्थाओं पर।

निगमन (Conclusion):
 यह आयत आस्थाओं और विश्वासों के आधार पर कर्मों के परिणामों को निर्धारित करती है, जो न्याय दर्शन और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 30 का अनुवाद:

"(ऐ रसूल जिस तरह हमने और पैग़म्बर भेजे थे) उसी तरह हमने तुमको उस उम्मत में भेजा है जिससे पहले और भी बहुत सी उम्मते गुज़र चुकी हैं -ताकि तुम उनके सामने जो कुरान हमने वही के ज़रिए से तुम्हारे पास भेजा है उन्हें पढ़ कर सुना दो और ये लोग (कुछ तुम्हारे ही नहीं बल्कि सिरे से) ख़ुदा ही के मुन्किर हैं तुम कह दो कि वही मेरा परवरदिगार है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मै उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी तरफ रुजू करता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
 यह आयत पैग़म्बर को यह आदेश देती है कि वह कुरान का प्रचार करें, और अपने विश्वास को शुद्ध रूप में प्रकट करें।

हेतु (Reasoning):
यह आयत विश्वास और प्रचार के महत्व को बताती है, लेकिन इसमें केवल धार्मिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी गई है। इसे तर्कसंगत और समकालीन दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह केवल विश्वास और प्रचार के संदर्भ में एक पक्षपाती दृष्टिकोण है, जिसमें निष्पक्षता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी है।

उदाहरण (Example):
दर्शन में, सत्य और प्रमाण को प्राथमिकता दी जाती है, न कि केवल विश्वास के आधार पर किसी विषय की स्वीकार्यता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और इसे तर्कसंगत दृष्टिकोण से मूल्यांकन करना मुश्किल है, क्योंकि इसमें वैज्ञानिक और तर्कसंगत निष्कर्षों का अभाव है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
26	**प्रमेय**	**केवल विश्वास पर आधारित विश्वव्यवस्था का आलोचनात्मक मूल्यांकन नहीं किया गया।**
27	**प्रमेय**	**विश्वास और अविश्वास के बीच का अंतर केवल दिव्य इच्छा पर आधारित है, कोई प्रमाण नहीं।**
28	**प्रमाण**	**केवल विश्वास पर आधारित मानसिक शांति, तर्कसंगत आधार का अभाव।**
29	**व्याप्ति**	**विश्वास और कर्म के आधार पर कर्मों का परिणाम तय करना तर्कसंगत नहीं है।**
30	**प्रमेय**	**केवल विश्वास पर आधारित प्रचार, निष्पक्ष तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में विश्वास और धार्मिक निर्देशों को प्रमुखता दी गई है, लेकिन इसमें तर्क और प्रमाण की कमी है। अधिकांश आयतें केवल आस्था, विश्वास और धार्मिक आदेशों पर आधारित हैं, जिनमें न्याय और तर्क के सिद्धांतों के अनुरूप कोई सुसंगतता नहीं है। धर्म और तर्क के बीच संतुलन स्थापित किए बिना यह दृष्टिकोण तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कमज़ोर साबित होता है।

आयत 31 से 35 का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण:

आयत 31 का अनुवाद:

"और अगर कोई ऐसा कुरान (भी नाज़िल होता) जिसकी बरकत से पहाड़ (अपनी जगह) चल खड़े होते या उसकी वजह से ज़मीन (की मुसाफ़त (दूरी)) तय की जाती और उसकी बरकत से मुर्दे बोल उठते (तो भी ये लोग मानने वाले न थे) बल्कि सच यूँ है कि सब काम का एख़्तेयार ख़ुदा ही को है तो क्या अभी तक इमानदारों को चैन नहीं आया कि अगर ख़ुदा चाहता तो सब लोगों की हिदायत कर देता और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया उन पर उनकी करतूत की सज़ा में कोई (न कोई) मुसीबत पड़ती ही रहेगी या (उन पर पड़ी) तो उनके घरों के आस पास (ग़ारज़) नाज़िल होगी (ज़रुर) यहाँ तक कि ख़ुदा का वायदा (फतेह मक्का) पूरा हो कर रहे और इसमें शक नहीं कि ख़ुदा हरगिज़ ख़िलाफ़े वायदा नहीं करता।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि यदि कोई विशेष चमत्कारी संकेत या बदलाव भी होता, तब भी ये लोग विश्वास नहीं करते। यह बताती है कि हिदायत का अधिकार केवल ईश्वर के पास है और हर व्यक्ति को उसकी कार्यों के अनुसार सज़ा मिलती है।

हेतु (Reasoning):
यह आयत मानवीय विश्वास और तर्क के आधार पर चर्चा नहीं करती है, बल्कि केवल ईश्वर की इच्छा और वादों पर आधारित है। यह निष्कर्ष तर्क और प्रमाण से स्वतंत्र है और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, जब कोई संकेत नहीं होता तो लोग तर्क और प्रमाण द्वारा सत्य को पहचानने की कोशिश करते हैं, न कि केवल चमत्कारी घटनाओं का इंतजार करते हैं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत मानवता को तर्क और विवेक के आधार पर सत्य की खोज करने की बजाय केवल ईश्वर की इच्छा पर निर्भर रहने की प्रेरणा देती है, जो न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से तर्कसंगत नहीं है।

आयत 32 का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल) तुमसे पहले भी बहुतेरे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई जा चुकी है तो मैने (चन्द रोज़) काफिरों को मोहलत दी फिर (आख़िर कार) हमने उन्हें ले डाला फिर (तू क्या पूछता है कि) हमारा अज़ाब कैसा था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि पहले के पैग़म्बरों का मज़ाक उड़ाया गया था और अंत में उनके विरोधियों को सज़ा मिली, जैसा कि ईश्वर के कार्यों में होता है।

हेतु (Reasoning):
यह आयत एक सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करती है, जो कि ईश्वर की इच्छा पर आधारित है और इसका कोई तर्कसंगत या प्रमाणित आधार नहीं है। केवल धार्मिक आस्थाओं को प्राथमिकता दी गई है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में, कार्यों के परिणामों का मूल्यांकन प्रमाण और कारण के आधार पर किया जाता है, न कि केवल धार्मिक विश्वास या आस्था पर।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना किसी स्पष्ट तर्क के एक सामान्य विचार प्रस्तुत करती है कि ईश्वर अपने विरोधियों को सज़ा देता है, जो कि तर्कसंगत दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं है।

आयत 33 का अनुवाद:

”क्या जो (ख़ुदा) हर एक शख़्स के आमाल की ख़बर रखता है (उनको यूं ही छोड़ देगा हरगिज़ नहीं) और उन लोगों ने ख़ुदा के (दूसरे दूसरे) शरीक ठहराए (ऐ रसूल तुम उनसे कह दो कि तुम आख़िर उनके नाम तो बताओं या तुम ख़ुदा को ऐसे शरीक़ो की ख़बर देते हो जिनको वह जानता तक नहीं कि वह ज़मीन में (किधर बसते) हैं या (निरी ऊपर से बातें बनाते हैं बल्कि (असल ये है कि) काफिरों को उनकी मक्कारियाँ भली दिखाई गई हैं और वह (गोया) राहे रास्त से रोक दिए गए हैं और जिस शख़्स को ख़ुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई हिदायत करने वाला नहीं।”

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि ईश्वर हर व्यक्ति के कर्मों की जानकारी रखता है और जो लोग ईश्वर के साथ साझीदार बनाते हैं, वे गलत हैं। ईश्वर की ओर से गुमराही का कोई हिदायत करने वाला नहीं होता।

हेतु (Reasoning):
यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सत्य को स्थापित करती है, लेकिन इसमें किसी प्रकार का तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है। यह दृष्टिकोण केवल विश्वास और धार्मिक मान्यताओं पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में, सत्य और ज्ञान का निष्कर्ष हमेशा प्रमाण और तर्क के आधार पर होता है। बिना प्रमाण के किसी के कर्मों का मूल्यांकन करना तर्कसंगत नहीं होता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल धार्मिक आस्था पर आधारित है और इसमें तर्क और प्रमाण की कमी है। यह दृष्टिकोण तात्त्विक रूप से मजबूत नहीं है।

आयत 34 का अनुवाद:

”इन लोगों के वास्ते दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो यक़ीनी और बहुत सख़्त खुलने वाला है (और) (फिर) ख़ुदा (के ग़ज़ब) से उनको कोई बचाने वाला (भी) नहीं।”

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि जिन लोगों ने अविश्वास किया, उनके लिए न केवल इस जीवन में बल्कि आख़िरत में भी सजा है, और कोई भी उन्हें बचाने वाला नहीं होगा।

हेतु (Reasoning):
यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि जो लोग अविश्वास करेंगे, उन्हें निश्चित रूप से सजा मिलेगी। यह दृष्टिकोण किसी तर्क या प्रमाण पर आधारित नहीं है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में, परिणाम हमेशा कर्मों के कारण निर्धारित होते हैं, और किसी विशेष विश्वास या आस्था के कारण नहीं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक विश्वास और आस्था पर आधारित है, जिसमें तर्क और प्रमाण का अभाव है। यह दृष्टिकोण न्याय और तर्क के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 35 का अनुवाद:

"जिस बाग़ (बेहिश्त) का परहेज़गारों से वायदा किया गया है उसकी सिफत ये है कि उसके नीचे नहरें जारी होगी उसके मेवे सदाबहार और ऐसे ही उसकी छांव भी ये अन्जाम है उन लोगों को जो (दुनिया में) परहेज़गार थे और काफिरों का अन्जाम (जहन्नुम की) आग है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि परहेज़गारों को स्वर्ग में सुख और शांति मिलेगी, जबकि काफिरों को नरक की आग मिलेगी।

हेतु (Reasoning):
यह आयत कर्मों के परिणामों को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें तर्क या वैज्ञानिक आधार का कोई उल्लेख नहीं है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में, किसी के कर्मों का मूल्यांकन तर्क और प्रमाण के आधार पर किया जाता है, न कि केवल धार्मिक विश्वास पर।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल धार्मिक विश्वास और आस्था पर आधारित है, जिसमें तर्क और प्रमाण का अभाव है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
31	**प्रमाण**	**तर्क और प्रमाण का अभाव, केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित।**
32	**प्रमेय**	**केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित निष्कर्ष, कोई तर्क नहीं।**
33	**प्रमाण**	**ईश्वर के निर्णय पर आधारित, बिना तर्क और प्रमाण के।**
34	**व्याप्ति**	**केवल विश्वास और आस्था पर आधारित परिणाम, कोई प्रमाण नहीं।**
35	**व्याप्ति**	**कर्मों का परिणाम केवल विश्वास पर आधारित है, तर्कसंगत नहीं।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रमुख रूप से धार्मिक विश्वास और ईश्वर की इच्छा पर आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। इनमें से अधिकांश आयतें तर्क और प्रमाण से रहित हैं और केवल आस्था पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से इन आयतों में तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 36
आयत का अनुवाद:
"और (ए रसूल) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तो जो (एहकाम) तुम्हारे पास नाज़िल किए गए हैं सब ही से खुश होते हैं और बाज़ फिरक़े उसकी बातों से इन्कार करते हैं तुम (उनसे) कह दो कि (तुम मानो या न मानो) मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मै ख़ुदा ही की इबादत करु और किसी को उसका शरीक न बनाऊ मै (सब को) उसी की तरफ बुलाता हूँ और हर शख़्स को हिर फिर कर उसकी तरफ जाना है (36)"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में, यह कहा गया है कि सभी लोग अल्लाह के प्रति विश्वास रखें और उसकी इबादत करें, चाहे वे माने या न माने।
- **हेतु (Reasoning):** यहां ज्ञान या सत्य को आत्मसात करने का कोई तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह विश्वास पर आधारित है कि अल्लाह ही सबका मार्गदर्शन करता है।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में ज्ञान को बौद्धिक प्रमाण, अनुभव और सही आचार से सिद्ध किया जाता है, न कि केवल आस्था से।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल आस्थात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसमें तार्किक विश्लेषण या सत्यापन का अभाव है। यह मानवता के लिए एक तर्कसंगत और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने में विफल है।

आयत 37
आयत का अनुवाद:
"और यूँ हमने उस कुरान को अरबी (ज़बान) का फरमान नाज़िल फरमाया और (ऐ रसूल) अगर कहीं तुमने इसके बाद को तुम्हारे पास इल्म (कुरान) आ चुका उन की नफसियानी ख़्वाहिशों की पैरवी कर ली तो (याद रखो कि) फिर ख़ुदा की तरफ से न कोई तुम्हारा सरपरस्त होगा न कोई बचाने वाला (37)"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत बताती है कि कुरान के बाद अन्य ज्ञान या इच्छाओं का पालन करना गलत है।
- **हेतु (Reasoning):** यह आयत किसी भी अन्य ज्ञान या तर्क को खारिज करती है, लेकिन यह प्रमाणित नहीं करती कि कुरान से बाहर कोई ज्ञान या तर्क गलत है।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में, तर्क और प्रमाण को महत्त्व दिया जाता है और केवल इच्छाओं की पूर्ति या अनुभव से सही ज्ञान की पुष्टि नहीं होती।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि कुरान अन्य ज्ञान की तुलना में कैसे अधिक प्रमाणिक और सही है। यह केवल अंधविश्वास और तर्कहीनता को बढ़ावा देती है।

आयत 38

आयत का अनुवाद:

"और हमने तुमसे पहले और (भी) बहुतेरे पैग़म्बर भेजे और हमने उनको बीवियाँ भी दी और औलाद (भी अता की) और किसी पैग़म्बर की ये मजाल न थी कि कोई मौजिज़ा ख़ुदा की इजाज़त के बगैर ला दिखाए हर एक वक़्त (मौऊद) के लिए (हमारे यहाँ) एक (क़िस्म की) तहरीर (होती) है (38)"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत पैग़म्बरों के बारे में बताती है कि उनका कोई भी कार्य अल्लाह की अनुमति के बिना नहीं हो सकता।
- **हेतु (Reasoning):** यह अवधारणा एक अलौकिक शक्ति के अस्तित्व पर आधारित है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक दृष्टिकोण में, हर कार्य का कोई तात्त्विक कारण और सिद्धांत होता है, जो अव्यक्त या अलौकिक नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तर्क और प्रमाण से परे है और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो सार्वभौमिक तर्क के अनुसार नकारात्मक है।

आयत 39

आयत का अनुवाद:

"फिर इसमें से ख़ुदा जिसको चाहता है मिटा देता है और (जिसको चाहता है बाक़ी रखता है और उसके पास असल किताब (लौहे महफ़ूज़) मौजूद है (39)"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि अल्लाह के पास एक स्थिर और अपरिवर्तनीय किताब है जिसमें सब कुछ लिखा है।
- **हेतु (Reasoning):** यह विचार कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं प्रस्तुत करता है, और यह प्रकृति और घटना के कारणों को छिपाने के बजाय उनके वास्तविक कारणों को नकारता है।
- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन में, किसी घटना के घटने का कारण हमेशा प्रमाणित और स्पष्ट होता है, न कि अलौकिक रूप से परिभाषित।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई सुसंगत और प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

आयत **40**

आयत का अनुवाद:

"और (ए रसूल) जो जो वायदे (अज़ाब वग़ैरह के) हम उन कुफ्फारों से करते हैं चाहे, उनमें से बाज़ तुम्हारे सामने पूरे कर दिखाएँ या तुम्हें उससे पहले उठा लें बहर हाल तुम पर तो सिर्फ एहकाम का पहुचा देना फर्ज़ है (40)"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत पैग़म्बर को निर्देश देती है कि वह केवल अल्लाह के आदेशों को पहुंचाएं और किसी भी परिणाम का उत्तरदायी न हों।
- **हेतु (Reasoning):** यह विचार धार्मिक आदेशों की अपवादहीनता को दर्शाता है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत या प्रमाणिक आधार नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में कार्यों के परिणामों का मूल्यांकन तर्क और नैतिकता के आधार पर किया जाता है, न कि केवल आदेशों के आधार पर।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल आदेशों और शक्ति के सिद्धांत को मान्यता देती है, और इसका तर्क और तात्त्विक आधार स्पष्ट नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
36	प्रमाण	ज्ञान का स्रोत प्रमाणित नहीं है, केवल आस्था पर निर्भर है।

37	**प्रमाण**	**कुरान के बाहर अन्य ज्ञान को खारिज करने का कोई तर्क नहीं है।**
38	**प्रमेय**	**अलौकिकता का कोई तात्त्विक आधार नहीं है।**
39	**व्याप्ति**	**अल्लाह के निर्णयों का कोई प्रमाण नहीं है, केवल विश्वास।**
40	**प्रमाण**	**आदेशों के बिना किसी कारण का स्पष्ट विवरण नहीं है।**

निष्कर्ष

इन आयतों में तर्क और न्याय दर्शन के तत्वों का अभाव है। ये आयतें केवल विश्वास, आदेश और अंधविश्वास पर आधारित हैं, जो माआयत 41 का विश्लेषण:

आयत का अनुवाद: "और उनसे हिसाब लेना हमारा काम है क्या उन लोगों ने ये बात न देखी कि हम ज़मीन को (फ़ुतुहाते इस्लाम से) उसके तमाम एतराफ (चारो ओर) से (सवाह कुफ्र में) घटाते चले आते हैं और ख़ुदा जो चाहता है हुक्म देता है उसके हुक्म का कोई टालने वाला नहीं और बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह कहा गया है कि ज़मीन का फैलाव घट रहा है और यह एक अल्लाह की इच्छा है, जिसका कोई टालने वाला नहीं है।**
- **हेतु (Reasoning): इस कथन के अनुसार, अगर हम इसका तात्त्विक आधार देखें, तो प्राकृतिक घटनाओं का घटना केवल एक सत्ताधारी की इच्छा पर आधारित नहीं हो सकता। ज़मीन के घटने का वैज्ञानिक कारण प्राकृतिक घटनाएँ और मानवीय क्रियाएँ हैं, जैसे युद्ध, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन आदि। इसे केवल "ख़ुदा की इच्छा" के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैज्ञानिक दृष्टिकोण में, जलवायु परिवर्तन, बर्फ के पिघलने, और महासागरीय स्तरों का बढ़ना यह दर्शाता है कि ज़मीन का आकार घटना या बदलना प्राकृतिक घटनाओं के कारण हो सकता है, न कि केवल किसी अलौकिक शक्ति के आदेश से। वैदिक शास्त्रों में भी इस प्रकार के परिवर्तनों को प्राकृतिक कारणों से ही जोड़ा जाता है।**

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से घटनाओं को समझाने का प्रयास करती है, जबकि तर्क और विज्ञान के सिद्धांतों के अनुसार इसे साकारात्मक या शास्त्रसम्मत तरीके से समझा नहीं जा सकता।

आयत 42 का विश्लेषण:

आयत का अनुवाद: "और जो लोग उन (कुफ्फार मक्के) से पहले हो गुज़रे हैं उन लोगों ने भी पैग़म्बरों की मुख़ालफत में बड़ी बड़ी तदबीरे की तो (ख़ाक न हो सका क्योंकि) सब तदबीरे तो ख़ुदा ही के हाथ में हैं जो शख़्स जो कुछ करता है वह उसे खूब जानता है और अनक़रीब कुफ्फार को भी मालूम हो जाएगा कि आख़िरत की खूबी किस के लिए है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत का दावा है कि पूर्व के काफ़िरों ने भी पैग़म्बरों की मुख़ालफत की और कोई भी तदबीरी योजना सफल नहीं हो सकी, क्योंकि यह सब "ख़ुदा के हाथ में" है।

- **हेतु (Reasoning):** यह आयत पूर्ववर्ती काफ़िरों और उनके कार्यों को इस आधार पर नकारती है कि उनका समूल नाश इसलिए हुआ क्योंकि वे अल्लाह की इच्छा के खिलाफ थे। परंतु यह तर्क बिना किसी तात्त्विक और वैज्ञानिक समझ के केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसके विपरीत, इतिहास और समाजशास्त्र में हम पाते हैं कि साम्राज्य और समाज अपनी शक्ति, संसाधनों और रणनीतियों पर आधारित होते हैं, न कि केवल धार्मिक विश्वासों पर।

- **उदाहरण (Example):** संस्कृत शास्त्रों और पौराणिक कथाओं में भी सामाजिक और प्राकृतिक कारणों से ही सभ्यताओं का पतन होता है, जैसे महाभारत में वर्णित युद्ध और कालांतर में हुए साम्राज्य की गिरावट। यह सिद्ध करता है कि सामाजिक और भौतिक शक्तियाँ ही मानव समाज की दिशा तय करती हैं, न कि केवल दिव्य हस्तक्षेप।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना किसी ठोस तर्क के समाज और इतिहास के घटनाओं को केवल दिव्य इच्छा से जोड़ती है, जो तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के खिलाफ है।

आयत 43 का विश्लेषण:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) काफिर लोग कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नही हो तो तुम (उनसे) कह दो कि मेरे और तुम्हारे दरमियान मेरी रिसालत की गवाही के वास्ते ख़ुदा और वह शख़्स जिसके पास (आसमानी) किताब का इल्म है काफी है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में पैग़म्बर की सत्यता को सिद्ध करने के लिए "ख़ुदा" और "आसमानी किताब का इल्म रखने वाला व्यक्ति" को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
- **हेतु (Reasoning): प्रमाण का आधार केवल धार्मिक विश्वास और किताबों में निहित ज्ञान नहीं हो सकता। सत्यता और ज्ञान का प्रमाण तर्क, सत्यापित डेटा और साक्ष्य पर आधारित होना चाहिए। इस आयत में खड़े किए गए प्रमाण व्यावहारिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से नकारात्मक हैं।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में प्रमाण को अनुभव (प्रत्यक्ष), अनुमान और उपमान के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो एक सुसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। जबकि केवल एक दिव्य गवाही पर आधारित प्रमाण से सत्यता की पुष्टि नहीं की जा सकती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत सत्यता के प्रमाण को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, जबकि तर्कसंगत और प्रमाणिक दृष्टिकोण से यह नकारात्मक है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क और प्रमाण के अभाव के कारण, धार्मिक विश्वास और अंधविश्वास को बढ़ावा दिया गया है। आयतों में प्रस्तुत घटनाएँ और उनके कारणों को तर्कसंगत रूप से समझने के बजाय अलौकिक हस्तक्षेप और दिव्य इच्छाओं के आधार पर प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन और विज्ञान के सिद्धांतों के विपरीत हैं।

नवता के सार्वभौमिक तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विपरीत हैं।